हिन्दी पाक्षिक

महानगर स्तंभ

RNI NO. RAJHIN/2017/70561

पृष्ठ संख्या.... 2

❐ वर्ष-8 ❐ अंक-17 जयपुर, रविवार 1 सितम्बर, 2024 ❐ एक प्रति 5 रुपये ❐ कुल पृष्ठ-4

पैरालंपिक 2024 में 3 पैरालंपिक पदक जीत अवनि लेखरा ने रचा इतिहास

अवनि लेखरा ने 30 अगस्त, 2024 को पेरिस 2024 पैरालंपिक में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल शूटिंग स्टैंडिंग स्पर्धा में अपने एसएच1 खिताब की सफलतापूर्वक रक्षा की और पैरालंपिक खेलों के इतिहास में दो स्वर्ण पदक जीत इतिहास रच दिया। ऐसा करने वाली पहली भारतीय महिला बन गईं।

राजस्थान के जयपुर में 8 नवंबर 2001 को जन्मी अवनि लेखरा भारत की सबसे प्रेरणादायी एथलीटों में से एक बनकर उभरी हैं। अडिग हौसले और दृढ़ संकल्प से भरी उनकी यात्रा 2012 में जीवन बदल देने वाली एक सड़क दुर्घटना, जिसके कारण उन्हें व्हीलचेयर पर रहना पड़ा, के बाद शुरू हुई। कठिन शारीरिक और भावनात्मक चुनौतियों के बावजूद, अवनि के पिता ने उनके स्वस्थ होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उन्हें अपने शारीरिक एवं मानसिक पुनर्वास के साधन के रूप में खेलों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। पैरालंपिक 2024 में, अवनि ने 3 पैरालंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट के रूप में इतिहास रचा! उनका समर्पण भारत को निरंतर गौरवान्वित करता रहता है।

तीरंदाजी से निशानेबाजी की ओर कदम

सटीकता, एकाग्रता और अनुशासन की मांग करने वाले तीरंदाजी के खेल के प्रति शुरुआत में आकर्षित होने वाली, अवनि को जल्द ही प्रतिस्पर्धी शूटिंग में अपनी असली पहचान मिल गई। प्रसिद्ध भारतीय निशानेबाज अभिनव बिंद्रा से प्रेरित होकर, उन्होंने 2015 में निशानेबाजी के खेल में कदम रखा। उनके समर्पण और नैसर्गिक प्रतिभा ने उन्हें जल्द ही दूसरों से अलग कर दिया और उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर जीत हासिल करना शुरू कर दिया। अवनि ने पैरा निशानेबाजी में विश्व रिकॉर्ड बनाया और खुद को इस खेल में एक मजबूत शक्ति के रूप में स्थापित किया।

शैक्षणिक गतिविधियां और बहुमुखी प्रतिभाएं

अपनी खेल से जुड़ी उपलब्धियों से परे, अवनि अपनी शैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सजग हैं। कठिन प्रशिक्षण कार्यक्रम के बावजूद, उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय में पांच वर्षीय विधि डिग्री पाठ्यक्रम में दाखिला लिया है। अपने खेल करियर के साथ-साथ कठिन अकादमिक गतिविधियों के बीच संतुलन बिठाने की उनकी क्षमता जीवन के सभी पहलुओं में उत्कृष्टता हासिल करने के उनके दृढ़ संकल्प को रेखांकित करती है।

पैरालंपिक में ऐतिहासिक सफलता

अवनि अपने खेल करियर के शिखर पर 2021 में टोक्यो पैरालंपिक खेलों में पहुंचीं, जहां उन्होंने एक ही स्पर्धा में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला

पैरालंपियन बनकर इतिहास रच दिया। उन्होंने आर2 - महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एसएच1 स्पर्धा में स्वर्ण पदक और आर8 - महिलाओं की 50 मीटर राइफल 3 पोजिशन एसएच1 स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। पैरालंपिक 2024 में स्वर्ण पदक जीतकर, अवनि लेखरा ने एकबार फिर से इतिहास रच दिया क्योंकि वह 3 पैरालंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट हैं। उनकी जीत की गूंज पूरे देश में सुनाई दी और भारतीय खेलों की एक अग्रणी प्रणेता के रूप में उनकी सफलता का उत्सव मनाया गया।

सफलता में सरकार का सहयोग

अवनि लेखरा की पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता बनने की यात्रा को भारत सरकार के अटूट समर्थन से काफी प्रोत्साहन मिला है। टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) के माध्यम से, अवनि को व्यापक वित्तीय सहायता मिली है जिससे उन्हें शीर्ष स्तरीय प्रशिक्षण सुविधाओं को सुलभ बनाने, विशेष खेल उपकरण खरीदने और विशेषज्ञ प्रशिक्षण का लाभ उठाने का मौका मिला है। इसके अतिरिक्त, खेलो इंडिया जैसे कार्यक्रमों ने उन्हें अपनी प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान किए हैं। पैरा खेलों में प्रतिभा को निखारने की सरकार की प्रतिबद्धता अवनि की सफलता की आधारशिला रही है, जिससे वह वैश्विक मंच पर उत्कृष्टता हासिल कर सकीं और अनगिनत अन्य दिव्यांग लोगों को प्रेरित कर सकीं।

सफलता की राह

अवनि की यात्रा 2021 के पैरालंपिक में ही समाप्त नहीं हुई। उन्होंने विश्व कप और एशियाई पैरा खेलों सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करना जारी रखा, जहां उन्होंने लगातार पदक जीते और नए मानक स्थापित किए। उनकी महत्वाकांक्षाएं खेल से भी आगे तक की हैं, क्योंकि उनका लक्ष्य भावी पीढ़ियों को प्रेरित करना और अपनी विधि की पढ़ाई के माध्यम से समाज में योगदान देना है। अवनि को उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए पद्म श्री और खेल रत्न सहित विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

अवनि लेखरा की कहानी अडिग हौसले, दृढ़ संकल्प और उत्कृष्टता हासिल करने की अटूट ललक की एक कहानी है। जीवन बदल देने वाली दुर्घटना से उबरने से लेकर पैरालंपिक चैंपियन बनने तक, उन्होंने यह दिखाया है कि धैर्य और दृढ़ता के सहारे कुछ भी संभव है। निरंतर बाधाओं को तोड़ना और नए रिकॉर्ड स्थापित करना जारी रखकर, अवनि लाखों लोगों के लिए आशा की किरण और प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं।

राजस्थान उच्च न्यायालय की प्लेटिनम जुबली का समापन समारोह अयोजित

जोधपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विकसित भारत में सभी के लिए सरल, सुलभ और सुगम न्याय की गारंटी बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने 25 अगस्त को जोधपुर में राजस्थान उच्च न्यायालय के प्लेटिनम जुबली के समापन समारोह को संबोधित करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि न्यायालय न्याय की सुगमता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते रहेंगे। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर राजस्थान उच्च न्यायालय संग्रहालय का उद्घाटन एवं डिजिटल इंडिया से प्रेरित आई.टी. प्लेटफॉर्म 'त्वरित' का शुभारम्भ किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि राजस्थान उच्च न्यायालय का अस्तित्व भारत की एकता के इतिहास से जुड़ा हुआ है। 500 से अधिक रियासतों को एक साथ लाने में सरदार वल्लभ भाई पटेल के अविस्मरणीय योगदान को याद करते हुए उन्होंने कहा कि राजस्थान की विभिन्न रियासतों के उच्च न्यायालयों को एकीकृत करके राजस्थान उच्च न्यायालय अस्तित्व में लाया गया। मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय एकता भारत की न्यायिक प्रणाली की आधारशिला है और इसे मजबूत करने से राष्ट्र और इसकी व्यवस्थाएं और मजबूत होंगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि न्याय सरल और सुस्पष्ट है, लेकिन कई बार प्रक्रियाएं इसे जटिल बना देती हैं। न्याय को यथासंभव सरल और सुस्पष्ट बनाने के लिए सभी प्रयास करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने खुशी जताई कि भारत ने इस दिशा में कई ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं। सरकार ने कई अप्रासंगिक औपनिवेशिक कानूनों को निरस्त कर दिया है। मोदी ने कहा कि भारत ने आजादी के दशकों बाद गुलामी की मानसिकता से बाहर निकलकर भारतीय दंड संहिता की जगह भारतीय न्याय संहिता को अपनाया है। उन्होंने कहा कि भारतीय न्याय संहिता 'दंड की जगह न्याय' के आदर्शों पर आधारित है जो भारतीय चिंतन

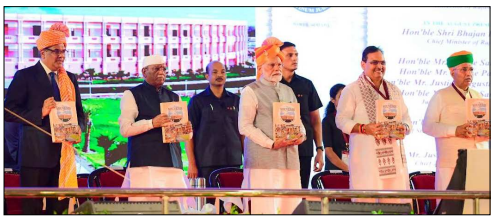

का आधार भी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भारतीय न्याय संहिता मानवीय चिंतन को आगे बढ़ाएगी। इसकी मूल भावना को ज्यादा से ज्यादा प्रभावी बनाना हमारी जिम्मेदारी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले दशक में देश में तेजी से बदलाव हुए हैं। भारत 10वें स्थान से आगे बढ़कर दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। उन्होंने नए भारत की जरूरतों के हिसाब से नए नवाचारों और प्रणालियों के आधुनिकीकरण की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने भारत की न्यायिक प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'ई-कोर्ट' परियोजना से देश में अब तक 18,000 से अधिक अदालतों का कम्प्यूटरीकरण किया जा चुका है और 26 करोड़ से अधिक अदालती मामलों से संबंधित जानकारी राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड के माध्यम से एक केंद्रीकृत ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने बताया कि 3000 से अधिक न्यायालय परिसरों और 1200 से अधिक जेलों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधाओं से जोड़ा गया है। उन्होंने इस दिशा में राजस्थान द्वारा किए जा रहे काम की गति पर भी प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज देश में लागत प्रभावी और त्वरित निर्णयों के लिए ''वैकल्पिक विवाद समाधान'' तंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह प्रणाली देश में ईज ऑफ लिविंग के साथ-साथ ईज ऑफ जस्टिस को भी बढ़ावा देगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि न्यायपालिका के सहयोग से ये प्रणालियां और अधिक मजबूत होंगी। मोदी ने कहा कि न्यायपालिका ने राष्ट्रीय मुद्दों पर सजग और सक्रिय रहने की नैतिक जिम्मेदारी लगातार निभाई है। उन्होंने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने और सीएए कानून का उल्लेख करते हुए कहा कि सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों ने अनेकों बार 'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प को और सशक्त किया है। सेकुलर सिविल कोड का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भले ही सरकार ने अब इस मामले को उठाया है, लेकिन भारत की न्यायपालिका ने दशकों से इसके पक्ष में वकालत की है। राष्ट्रीय एकता के मामलों में न्यायालय का रुख नागरिकों में विश्वास पैदा करता है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि 21वीं सदी के भारत में 'एकीकरण' शब्द बहुत बड़ी भूमिका निभाने वाला है। हमारा विजन है कि परिवहन के साधनों, स्वास्थ्य प्रणाली सहित देश की सभी आईटी प्रणालियों को एकीकृत किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पुलिस, फॉरेंसिक, प्रक्रिया सर्विस मैकेनिज्म और सर्वोच्च न्यायालय से लेकर जिला न्यायालयों तक सभी एक साथ जुड़कर काम करें। उन्होंने राजस्थान की सभी जिला अदालतों में आज शुरू की गई एकीकरण परियोजना के लिए अपनी शुभकामनाएं भी दीं। मोदी ने कहा कि आज के भारत में गरीबों के सशक्तिकरण के लिए प्रौद्योगिकी का सफल उपयोग हो रहा है, जिसको कई वैश्विक एजेंसियों और संगठनों से प्रशंसा मिली है। भारत डीबीटी से लेकर यूपीआई तक कई क्षेत्रों में एक वैश्विक मॉडल के रूप में उभरा है। न्याय प्रणाली में भी इसी अनुभव को लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी का उपयोग कर कानूनी दस्तावेजों और निर्णयों को स्थानीय भाषाओं में लोगों तक पहुंचाने के लिए काम किया जाना चाहिए। गरीबों को सशक्त बनाने का यह सबसे प्रभावी साधन बन सकती है। सर्वोच्च न्यायालय ने एक सॉफ्टवेयर की मदद से इसकी शुरुआत कर दी है, जिससे न्यायिक दस्तावेजों का 18 भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सरकार दिशा नामक एक अभिनव समाधान को भी बढ़ावा दे रही है। इस अभियान में मदद करने के लिए उन्होंने कानून के छात्रों और अन्य कानूनी विशेषज्ञों को आमंत्रित किया।

प्रधानमंत्री ने राजस्थान उच्च न्यायालय के प्लेटिनम जुबली समारोह का हिस्सा बनने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि राजस्थान उच्च न्यायालय ऐसे समय में 75 साल पूरे कर रहा है, जब भारत का संविधान भी अपने 75 साल पूरे करने वाला है। यह कई महान हस्तियों की न्याय निष्ठा और योगदान का स्मरण करने का अवसर है। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि राजस्थान उच्च न्यायालय का स्वर्णिम इतिहास रहा है। इसका नाम उन 9 उच्च न्यायालयों में गर्व के साथ लिया जाता है, जिन्होंने देश में आपातकाल के दौरान भी न्याय के सिद्धांतों की रक्षा की। उन्होंने कहा कि जब आपातकाल के दौरान नागरिक अधिकारों का हनन हो रहा था, तब इस न्यायालय ने यह सुनिश्चित किया कि व्यक्ति अपनी गिरफ्तारी और हिरासत को चुनौती दे सके। यह निर्णय इस बात का प्रमाण है कि न्यायालय ने हमेशा 'कानून का शासन' का सम्मान किया है और उसकी रक्षा के लिए खड़ा रहा है। शर्मा ने कहा कि राजस्थान में न्यायपालिका, कार्यपालिका तथा विधायिका बेहतर काम कर रही हैं। इसी का परिणाम है कि ढेरों मामले आपसी समझाइश से सुलझे हैं और लोगों को लंबी कानूनी प्रक्रिया से निजात मिली है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्षों पुराने कानूनों को खत्म करने, नये कानूनों से प्रक्रिया को आसान बनाने और नियमों के सरलीकरण जैसे काम किए हैं। सरलीकरण के तहत जन विश्वास (प्रावधानों में संशोधन) अधिनियम, 2023 के 42 केंद्रीय कानूनों में से 183 प्रावधानों को अपराधमुक्त करके व्यापार करने में आसानी लाने के लिए बनाया गया है।

संपादकीय

आरक्षण खत्म करने की बात कब?

प्राइवेट सेक्टर की नौकरियों में आरक्षण को लेकर कर्नाटक सरकार ने यूटर्न ले लिया है। सरकार ने पहले सी और डी कैटेगरी की प्राइवेट नौकरियों में स्थानीय लोगों को आरक्षण देने की बात कही थी। फिलहाल, आरक्षण के उस फैसले पर रोक लगा दी गई है।दलित और पिछड़े युवाओं के उत्थान के लिए लाया गया आरक्षण अब सत्ता में पहुंचने माध्यम बनता जा रहा है। अलग-अलग राज्य में राजनैतिक दल जहां आरक्षण को अपने हिसाब से अदल-बदल रहे हैं, वही प्राइवेट सेक्टर में भी आरक्षण लागू करने की कोशिश हो रही है। कुछ राज्यों ने अपने यहां ये आरक्षण लागू किया पर वहां के हाईकोर्ट ने उसे अवैध बताते हुए रोक लगा दी, पर ये कोशिश जगड़ूजगह जारी है। सर्वोच्च न्यायालय की सात न्यायधीश की संविधान पीठ आरक्षण में क्रीमीलेयर लागू करने की बात की तो विपक्ष ने राजनैतिक लाभ उठाने के लिए इसका विरोध शुरू कर दिया। हांलाकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आश्वस्त कर चुके हैं कि आरक्षण में क्रीमीलेयर लागू नहीं होगा, इसके बावजूद आरक्षण समर्थक राजनैतिक दलों ने इसके विरूद्ध आंदोलनरत हैं। अभी वे भारत बंद का आह्वान कर ही चुके हैं। इससे पहले कर्नाटक में प्राइवेट नौकरी में स्थानीय के लिए शत प्रतिशत आरक्षण को लागू करने पर खड़ा हो गया। हांलाकि प्रदेश कैबिनेट में पास किया गया ये कानून विरोध को देखते हुए ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है, पर खत्म नहीं किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा है कि अगली कैबिनेट की बैठक में इस पर फिर विचार होगा।हाल के लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण के आतेङ्कआते प्रचार आरक्षण पर आकर सिमट गया। भाजपा नेता अपने भाषणों में दावा कर रहे है कि हम देश में मुस्लिम आरक्षण लागू नही होने देंगे। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी सभाओं में मुस्लिम आरक्षण पर चिंता जाहिर कर रहे हैं। वह कह रहे हैं कि सत्ता में आते ही इंडिया गठबंधन दलित और पिछडों का आरक्षण काटकर मुस्लिमों को दे देगा। वे देश का विभाजन करवा देंगे। इस पर कुछ बड़े नेता तो चुप्पी साधे है किंतु समाजवादी पार्टी के सांसद एसटी हसन ने एक बयान में कहा है कि इंडिया गठबंधन के सत्ता में आते ही संविधान में संशोधन कर मुस्लिमों को सरकारी सेवाओं में आरक्षण दिया जाएगा। देश को आजाद हुए 75 साल से ज्यादा हो गए। आजादी के बाद दलित समाज को विकास की धारा में शामिल करने के लिए दस साल के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई थी। आज ये आरक्षण राजनेताओं को सत्ता में पंहुचने का माध्यम नजर आने लगा है, वे इसे बढ़ाने की बात कर रहे हैं। खत्म करने की नहीं। किसी को यह सोचने की फुरसत नही कि आरक्षण की मार से बचने के लिए देश के प्रतिभाशाली युवा आज विदेशों में जाकर शिक्षा ले रहे है। शिक्षा पूरी कर वहीं नौकरी या व्यवसाय कर चुने गए देश के विकास में योगदान कर रहे हैं। भारत के बाहर जाकर बसी भारत की मेधा से प्रभावित होते देश के विकास पर किसी को सोचने का समय नहीं।प्राइवेट सेक्टर की नौकरियों में आरक्षण को लेकर कर्नाटक सरकार ने यूटर्न ले लिया है। सरकार ने पहले सी और डी कैटेगरी की प्राइवेट नौकरियों में स्थानीय लोगों को आरक्षण देने की बात कही थी। फिलहाल, आरक्षण के उस फैसले पर रोक लगा दी गई है। कैबिनेट ने फैसला स्थगित कर दिया है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने प्राइवेट सेक्टर में कन्नड़ लोगों को 100 फीसदी आरक्षण देने को लेकर सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट की थी। अपनी इस पोस्ट में उन्होंने कहा, हम कन्नड़ समर्थक सरकार हैं। सरकार के इस फैसले का चौतरफा विरोध होने पर इस पर रोक लगा दी गई। सरकार का कहना है कि इस बिल पर वह पुनर्विचार करेगी। देश में यह पहला ऐसा मामला नहीं है। कर्नाटक से पहले प्राइवेट सेक्टर में स्थानीय लोगों को आरक्षण देने के लिए आंध्र प्रदेश और हरियाणा में कोशिश की गई थी. वहीं, मध्य प्रदेश में भी सरकार ने ऐसा ही कहा था, लेकिन यह कोशिश रंग नहीं ला पाई थी। 2019 में आंध्र प्रदेश में पहली बार ऐसा कोई कानून बना था जहां 75 प्रतिशत स्थानीय लोगों को प्राइवेट नौकरियों में आरक्षण देने की बात कही गई थी। पर हाईकोर्ट ने इसे असंवैधानिक बताते हुए रद्द कर दिया था।

सर्वोच्च न्यायालय के 75 वर्ष पूरे होने पर स्मारक डाक टिकट जारी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अगस्त को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित जिला न्यायाधीशों के सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान इस डाक टिकट का अनावरण किया गया। इस कार्यक्रम में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डॉ. डी. वाई. चंद्रचूड़, केन्द्रीय विधि एवं न्याय तथा संसदीय कार्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। यह स्मारक टिकट, भारत की न्यायिक प्रणाली में सर्वोच्च न्यायालय के अमूल्य योगदान तथा राष्ट्र के कानूनी परिदृश्य को स्वरूप प्रदान करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका का प्रतीक है। 28 जनवरी, 1950 को स्थापित सर्वोच्च न्यायालय कानून के शासन को बनाए रखने, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने तथा पूरे देश में न्याय प्रशासन सुनिश्चित करने में अग्रणी रहा है। संचार मंत्रालय के अंतर्गत डाक विभाग, यह स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव कर रहा है, जो भारत के न्यायिक इतिहास में सर्वोच्च न्यायालय की स्थायी विरासत का प्रमाण है। यह आयोजन, भारतीय न्यायपालिका के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसके तहत देश में न्याय और कानून के शासन को बनाए रखने के लिए सर्वोच्च न्यायालय की प्रतिबद्धता के साढ़े सात दशकों का उत्सव मनाया जा रहा है।

राज्यपाल बागडे ने मेहरानगढ़ दुर्ग देखा, कहा इतिहास की अनुपम सौगात

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे 26 अगस्त को जोधपुर प्रवास के दौरान विश्व प्रसिद्ध मेहरानगढ़ दुर्ग पहुंचे। उन्होंने मेहरानगढ़ के स्थापत्य और शिल्प सौंदर्य की सराहना की। वहां पहुंचने पर उनका केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देस की धुन के साथ स्वागत किया गया। मेहरानगढ़ से उन्होंने जोधपुर के विहंगम दृश्य को निहारा और वहां के संग्रहालय को भी देखा। उन्होने दुर्ग के सौंदर्य को अनुपम बताते हुए कहा कि इतिहास की यह महती सौगात है।

केन्द्रीय कारागृह में पौधारोपण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

जयपुर। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत 22 अगस्त को केन्द्रीय कारागृह में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं जिला एवं सेशन न्यायाधीश, जयपुर महानगर द्वितीय चन्द्र प्रकाश श्रीमाली, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव (अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश), जयपुर महानगर द्वितीय पल्लवी शर्मा ने भी पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान श्रीमाली ने बंदियों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में पौधारोपण एवं पर्यावरण सरंक्षण की महत्ती आवश्यकता है। कोई भी व्यक्ति किसी भी स्थिति में पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकता है। इस राष्ट्रव्यापी अभियान के अंतर्गत एक पेड़ अपनी मां के सम्मान में लगाने का संदेश भी दिया।

सचिव पल्लवी शर्मा ने बताया कि बंदियों के मध्य पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए एवं भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर पौधारोपण की गति को बढ़ाने एवं पेड़ों को एक परिवार के रूप में समझ कर पर्यावरण संरक्षण हेतु चलाये जा रहे के तहत विशेष अभियान एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम आयोजन किया। कार्यक्रम में उपस्थित सचिव पल्लवी शर्मा, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, जयपुर महानगर द्वितीय मांडवी राजवी, डिप्टी जेलर इन्द्रकुमार आदि ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधारोपण में सहयोग करते हुए स्वयं भी पर्यावरण संरक्षण करने की शपथ ली। पौधारोपण कार्यक्रम के पश्चात श्रीमाली द्वारा केंद्रीय कारागृह का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया।

मुख्यमंत्री ने साइक्लोथोन को दिखाई हरी झण्डी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि बढ़ता प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हमारी धरती को दिन-प्रतिदिन कमजोर बना रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे में हम सभी का कर्तव्य है कि मिलकर पर्यावरण को बचाने के लिए सार्थक प्रयास करें। शर्मा ने कहा कि हम सब मिलकर पर्यावरण और अपने स्वास्थ्य की सुरक्षा का संकल्प लें और हरा-भरा व स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित करें। प्रकृति को बचाने के लिए बदलाव की शुरूआत हमें स्वयं से ही करनी होगी। मुख्यमंत्री शर्मा ने 24 अगस्त को जयपुर के एसएमएस स्टेडियम से हिन्दू आध्यात्मिक एवं सेवा मेला तथा आइएमसीटी फाउण्डेशन द्वारा पर्यावरण सरंक्षण के लिए आयोजित साइकिल रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं तथा हमें

स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी करते हैं। इनसे हम शारीरिक रूप से तो स्वस्थ रहते ही हैं साथ ही, हमारा मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

12 हजार से अधिक लोगों ने साइक्लोथोन में लिया भाग

राइड फॉर ए ग्रीन फ्यूचर, पैडल फॉर द प्लेनेट तथा चलो प्रकृति की ओर के संदेश के साथ द्वितीय साइक्लोथोन में 12 हजार से अधिक युवाओं, महिलाओं, बजुर्गों तथा बच्चों ने उत्साह के साथ भागीदारी की। यह साइकिल रैली एसएमएस स्टेडियम से प्रारंभ होकर अल्बर्ट हॉल पर समाप्त हुई। शर्मा ने कहा कि हम सबका यह सामूहिक दायित्व है कि हम पर्यावरण का संरक्षण करें। उन्होंने कहा कि हम अपने व्यक्तिगत जीवन में भी वाहन से प्रदूषण फैलाते हैं तो ऐसे में यह हमारी जिम्मेदारी है कि इसकी क्षतिपूर्ति करने के लिए हम अधिक से अधिक संख्या में पेड़ लगाएं एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए सदैव तत्पर रहें।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सभी प्रदेशवासियों से प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाने तथा पर्यावरण के संरक्षण की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाए गए 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में हम सब बढ़-चढ़कर हिस्सा लें तथा पर्यावरण संरक्षण की तरफ कदम बढ़ाएं। इस दौरान युवा मामले एवं खेल राज्यमंत्री के के विश्नोई, सांसद मंजू शर्मा, विधायक बालमुकुंदाचार्य, जयपुर ग्रेटर नगर निगम उप महापौर पुनीत कर्णावट, पर्यावरणविद तथा बड़ी संख्या में युवा एवं आमजन उपस्थित रहे।

SHAH EDUCOM
A UNIT OF RIGHT VISION COMPUTER INSTITUTE
SYNONYM OF QUALITY EDUCATION
222, RAY COLONY, HASANPURA-C, KHATIPURA ROAD, JAIPUR
Ph. 2221152 • Mob. : 9024450092, 7791944837 Email : shaheducomitgk@gmail.com
COMPUTER COURSE
BASIC • TALLY
DTP • C, C++, JAVA
COACHING CLASSES
1 to 10TH
MATHS & SCIENCE
COMMERCE CALSSES
11TH & 12TH
B. COM
BBA
BCA
TYPING CALSSES
HINDI / ENGLISH
(COMPUTER & TYPEWRITER)
TYPING BY SOFTWARE
TYPING CLASSES
FOR COMPETITION EXAM
RS-CIT
CCC
O-LEVEL
WI-FI CAMPUS
Teach By Best Faculty

Since 2006
CSP
Creative Study Point
नींव से निर्माण तक
Batches Start
CREATIVE STUDY POINT
11th & 12th
(Physics, Chemistry, Bio & Maths)
11th & 12th
(Commerce)
Separate Batches For Both Medium
9th & 10th
(Science, Maths, English, S.St)
B.Sc
(Maths & Physics)
Mob. 9414795238
9829033204
Add. P.No. 10, Krishna Colony, Near Modal School, Ramgarh Mode, Jaipur

नए अनुसंधान लाखों मधुमेह रोगियों के लिए उम्मीद की किरण

नई दिल्ली। अनुसंधानकर्ताओं ने जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल्स की क्षमता का पता लगाया है। यह किडनी के कार्य को बेहतर बनाने और डायबिटिक नेफ्रोपैथी से निपटने में मददगार हो सकता है। इससे मधुमेह से जुड़ी किडनी संबंधी समस्याओं के प्रबंधन में नए चिकित्सीय दृष्टिकोणों का मार्ग प्रशस्त हुआ है। डायबिटिक नेफ्रोपैथी लंबे समय तक मधुमेह के कारण होने वाली एक आम, गंभीर जटिलता और दुर्बल करने वाली स्थिति है। यह आशाजनक खोज मधुमेह से जुड़ी किडनी संबंधी समस्याओं के प्रबंधन में नए चिकित्सीय दृष्टिकोणों का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

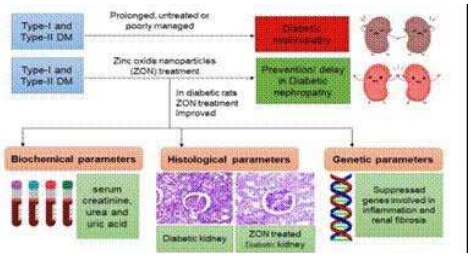

डायबिटिक नेफ्रोपैथी लंबे समय तक मधुमेह के कारण होने वाली एक जटिलता है। यह टाइप-फर्स्ट मधुमेह के 20-50 प्रतिशत रोगियों को प्रभावित करती है। यह गुर्दे के कार्य में क्रमिक गिरावट के कारण होता है, जो अक्सर अंतिम चरण के गुर्दे की बीमारी (ईएसआरडी) में परिणत होती है। मधुमेह के रोगियों में, उच्च रक्त शर्करा गुर्दे में ऑक्सीडेटिव तनाव उत्पन्न करता है, और सूजन वाले अणुओं को सक्रिय करता है। पौधों से प्राप्त कई अणुओं और उत्पादों की डायबिटिक नेफ्रोपैथी में उनकी चिकित्सीय भूमिका के लिए जांच की जा रही है। मधुमेह रोगियों में डायबिटिक नेफ्रोपैथी का संबंध जिंक की कमी से है। जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल जैव द्वारा उपलब्ध जिंक आयनों की निरंतर रिलीज के लिए एक डिपो के रूप में कार्य करता है। एआरआई में पशु मॉडल में किए गए अध्ययनों ने जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल के ग्लूकोज कम करने, इंसुलिनोमिमेटिक और बीटा प्रसारक प्रभावों को साबित किया है। हाल ही में, यह देखने के लिए प्रयोग किए गए थे कि क्या जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल गुर्दे की क्षति के लिए अग्रणी सेलुलर मार्गों को भी कम कर सकता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के एक स्वायत्त संस्थान, पुणे के अघारकर अनुसंधान संस्थान के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा डायबिटिक नेफ्रोपैथी से पीड़ित विस्टार चूहों पर किए गए एक अध्ययन में, इंसुलिन-उपचारित मधुमेह चूहों की तुलना में जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल द्वारा उपचार ने गुर्दे के कार्य में काफी सुधार

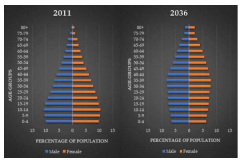

किया। इसके अतिरिक्त, जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल ने उच्च रक्त शर्करा प्रेरित सूजन वाली कोशिका के मृत होने से रोकने में सुरक्षा प्रदान की। जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल उपचार ने कुछ प्रोटीन को भी संरक्षित किया, जो गुर्दे के कार्य के लिए आवश्यक हैं। जर्नल लाइफ साइंसेज में प्रकाशित निष्कर्ष बताते हैं कि जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल मधुमेह संबंधी जटिलताओं के इलाज के लिए एक पूरक चिकित्सीय एजेंट के रूप में काम कर सकता है। अध्ययन में एक संभावित तंत्र का प्रस्ताव है, जिसके माध्यम से जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल, डायबिटिक नेफ्रोपैथी को रोकता है, जिससे यह व्यवस्थित पोडोसाइट पर जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल के प्रभावों को प्रदर्शित करने वाला पहला अध्ययन बन जाता है।

हालांकि इन निष्कर्षों को नैदानिक कार्य के रूप में परिणत करने के लिए भविष्य के अनुसंधान की आवश्यकता होगी, लेकिन यह अध्ययन दुनिया भर में लाखों मधुमेह रोगियों के लिए आशा की किरण प्रदान करता है। निरंतर अन्वेषण के साथ, जिंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल, डायबिटिक नेफ्रोपैथी के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण उपकरण बन सकते हैं, जिससे इस पुरानी बीमारी से प्रभावित लोगों के लिए जीवन की गुणवत्ता और स्वास्थ्य परिणामों में सुधार हो सकता है। चिकित्सा समुदाय और रोगी दोनों ही ऐसे भविष्य के लिए आशान्वित हैं, जहां डायबिटिक नेफ्रोपैथी की बीमारी को प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है अथवा यहां तक कि रोका भी जा सकता है।

भारत में महिलाएं और पुरुष 2023 नामक पुस्तिका का विमोचन

भारत सरकार के सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने ÷भारत में महिलाएं और पुरुष 2023÷ शीर्षक वाली अपनी पुस्तिका का 25वां अंक 12 अगस्त को जारी किया। यह पुस्तिका एक व्यापक और अंतर्दृष्टिपूर्ण दस्तावेज है जो भारत में महिलाओं और पुरुषों की स्थिति के बारे में समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है और जनसंख्या, शिक्षा, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था में भागीदारी, निर्णय लेने में सहभागिता आदि जैसे विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला पर डेटा प्रदान करता है। यह जेंडर, शहरी-ग्रामीण विभाजन और भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर अलग-अलग डेटा प्रस्तुत करता है, जो महिलाओं और पुरुषों के विभिन्न समूहों के बीच विद्यमान असमानताओं को समझने में मदद करता है। पुस्तिका में विभिन्न मंत्रालयों/ विभागों/ संगठनों के प्रकाशित आधिकारिक डेटा से प्राप्त महत्वपूर्ण संकेतक शामिल हैं। ÷भारत में महिलाएं और पुरुष 2023÷ न केवल लैंगिक समानता की दिशा में की गई प्रगति को रेखांकित करता है, बल्कि उन क्षेत्रों की भी पहचान करता है जहां महत्वपूर्ण अंतर बने हुए हैं।

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक संकेतकों की जांच करके, पुस्तिका समय के साथ रुझानों का कुछ विश्लेषण प्रस्तुत करती है और इस प्रकार नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और आम जनता को सूचित निर्णय लेने और जेंडर-संवेदनशील नीतियों के विकास में योगदान करने में मदद करती है। यह रिपोर्ट भारत में महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए जनसांख्यिकीय परिवर्तनों और उनके निहितार्थों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने की वकालत और कार्रवाई करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करता है कि विकास प्रयास समावेशी और टिकाऊ हों। यह पुस्तिका मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

पुस्तिका के कुछ मुख्य अंश-

2036 तक भारत की जनसंख्या के 152.2 करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद है, महिला प्रतिशत 2011 के 48.5 प्रतिशत की तुलना में मामूली वृद्धि के साथ 48.8 प्रतिशत होगा। संभवतः प्रजनन क्षमता में गिरावट के कारण 15 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों का अनुपात 2011 की तुलना में 2036 में घटने का अनुमान है। इसके विपरीत, इस अवधि के दौरान 60 वर्ष और उससे अधिक आयु की आबादी के अनुपात में अधिक वृद्धि होने का अनुमान है। 2036 में भारत की जनसंख्या में 2011 की जनसंख्या की तुलना में स्त्रियों की संख्या अधिक होने की उम्मीद है, जैसा कि जेंडर अनुपात में परिलक्षित होता है, जिसके 2011 में 943 से बढ़कर 2036 तक 952 होने का अनुमान है। यह लैंगिक समानता में सकारात्मक प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह स्पष्ट है कि 2016 से 2020 तक, 20-24 और 25-29 आयु वर्ग में आयु विशिष्ट प्रजनन दर क्रमशः 135.4 और 166.0 से घटकर 113.6 और 139.6 हो गई है। उपरोक्त अवधि के लिए 35-39 आयु के लिए एएसएफआर 32.7 से बढ़कर 35.6 हो गया है, जो दर्शाता है कि जीवन में व्यवस्थित होने के बाद, महिलाएं परिवार के विस्तार पर विचार कर रही हैं।

2020 में किशोर प्रजनन दर निरक्षर आबादी के लिए 33.9 थी, जबकि साक्षर लोगों के लिए 11.0 थी। यह दर उन लोगों के लिए भी अत्यधिक कम है जो साक्षर हैं, लेकिन निरक्षर महिलाओं की तुलना में बिना किसी औपचारिक शिक्षा के (20.0) के हैं। यह तथ्य महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के महत्व पर फिर से जोर देता है। मातृत्व मृत्यु दर (एमएमआर) एसडीजी संकेतकों में से एक है और इसे 2030 तक 70 तक लाया जाना एसडीजी ढांचे में स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया है। सरकार के निरंतर प्रयासों के कारण, भारत ने समय रहते अपने एमएमआर (2018-20 में 97 लाख जीवित शिशु) को कम करने का प्रमुख मील का पत्थर सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है और एसडीजी लक्ष्य को भी हासिल करना संभव होना चाहिए।

शिशु मृत्यु दर में पिछले कुछ वर्षों में पुरुष और महिला दोनों के लिए कमी आ रही है। महिला आईएमआर हमेशा पुरुषों की तुलना में अधिक रही है, लेकिन 2020 में, दोनों 1000 जीवित शिशु पर 28 शिशुओं के स्तर पर बराबर थे। 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर के आंकड़ों से पता चलता है कि यह 2015 में 43 से घटकर 2020 में 32 हो गई है। यही स्थिति लड़के और लड़कियों दोनों के लिए है और लड़के तथा लड़कियों के बीच का अंतर भी कम हुआ है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार, 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की श्रम बल भागीदारी दर 2017-18 से पुरुष और महिला दोनों आबादी के लिए बढ़ रही है। यह देखा गया है कि 2017-18 से 2022-23 के दौरान पुरुष एलएफपीआर 75.8 से बढ़कर 78.5 हो गया है और इसी अवधि के दौरान महिला एलएफपीआर 23.3 से बढ़कर 37 हो गई है।

15वें राष्ट्रीय चुनाव (1999) तक, 60 प्रतिशत से कम महिला मतदाताओं ने भाग लिया, जिसमें पुरुषों का मतदान 8 प्रतिशत अधिक था। हालांकि, 2014 के चुनावों में महिलाओं की भागीदारी बढ़कर 65.6 प्रतिशत हो गई और 2019 के चुनावों में यह और अधिक बढ़कर 67.2 प्रतिशत हो गई। पहली बार, महिलाओं के लिए मतदान प्रतिशत थोड़ा अधिक रहा, जो महिलाओं में बढ़ती साक्षरता और राजनीतिक जागरूकता के प्रभाव को दर्शाता है। उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग ने जनवरी 2016 में अपनी स्थापना के बाद से दिसंबर 2023 तक कुल 1,17,254 स्टार्ट-अप को मान्यता दी है। इनमें से 55,816 स्टार्ट-अप महिलाओं द्वारा संचालित हैं, जो कुल मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप का 47.6 प्रतिशत है। यह महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व भारत के स्टार्ट-अप इकोसिस्टम में महिला उद्यमियों के बढ़ते प्रभाव और योगदान को रेखांकित करता है।

एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत सघन पौधारोपण कर बनाया विश्व रिकॉर्ड

जयपुर। पंचायती राज एवं शिक्षा मंत्री मदन दिलावर को हरियाली तीज के अवसर पर मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाभियान के अंतर्गत एक पेड़ माँ के नाम पर सघन पौधारोपण कर विश्व रिकॉर्ड बनाने के उपलक्ष्य में वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन ने सर्टिफिकेट प्रदान किया। दिलावर ने बताया कि प्रदेश में अच्छी बरसात होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति भी प्रदेश पर मेहरबान है। बीज से पौधा और पौधे को पेड़ बनाने का सरकार का यह अभियान अब जनआंदोलन बन गया है। प्रदेश में करोड़ों पौधे लगाकर तापमान को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया है। इन पौधों की ऑनलाइन मोनिटरिंग भी की जा रही है एवं वृक्ष प्रेमियों को एप के माध्यम से प्रशस्ति पत्र दिये जायेंगे। इस अभियान में सरकारी व निजी विद्यालय, गोशाला, साधु - संत, व्यापारिक प्रतिष्ठान, पेट्रोल पंप, सरकारी योजनाओं के लाभार्थी, सामाजिक संस्था, ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन, उद्योग, गैस एजेंसी एवं खान मालिकों ने भी बढ चढकर जागरूकता दिखाई। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल, निदेशक आशीष मोदी, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन के वाइस प्रेसिडेंट प्रथम भल्ला सहित अधिकारी उपस्थित थे।

भगवान झूलेलाल की जीवन लीला पर आधारित भव्य नाटक मंचित

जयपुर। सिन्धी समुदाय के इष्टदेव भगवान श्री झूलेलाल के पवित्र चालीहा महोत्सव के उपलक्ष में स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की प्रेरणा से स्वामी मनोहर लाल जी साईं मोनू राम जी और अमरापुर की संत मंडली के तत्वाधान में प्रेम प्रकाश परिवार के सौजन्य से चेटी चंड महोत्सव समिति (सिंधियत)के कलाकारों द्वारा भगवान श्री झूलेलाल की जीवन लीला पर आधारित सिन्धी नाटक ''भगवान श्री झूलेलाल'' का भव्य एवं रंगारंग मंचन श्री अमरापुर स्थान जयपुर में 17 अगस्त को किया गया। इस नाटक को देखने के लिए न केवल सिन्धी समुदाय बल्कि अन्य समुदाय के लोग भी उपस्थित रहे। सभी ने इस नाटक को देखकर भगवान श्री झूलेलाल की शिक्षाओं को ग्रहण किया। दर्शकों की भीड़ से सत्संग हाल पूरा खचाखच भरा रहा तथा कई दर्शक प्रांगण में खड़े खड़े ही नाटक का

आनन्द ले रहे थे। नाटक में जबरदस्ती धर्म परिवर्तन को रोकने और बादशाह मिर्ख शाह के जुल्मों से बचाने के लिये भगवान श्री झूलेलाल के चमत्कारों को दर्शाया गया था।

नाटक के लेखक सिन्धी और हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार एवं रंगमंच कलाकार रमेश रंगाणी एवं वरिष्ठ साहित्यकार गोविंदराम माया थे। निर्देशन किया था वरिष्ठ रंगमंच कलाकार और निर्देशक दिलीप रामचंदानी ने। नाटक के संयोजक हेमंत खटवानी थे। सिन्धू स्तुति पर नृत्य डा. पूनम केसवानी ने किया। नाटक के कलाकारों में देव सागर गोविन्दानी, हेमंत खटवानी, रिनी मिराजा, सुरेश खटवानी, धर्मदास खत्री, धैर्य कलवानी, धर्मेंद्र मूलवानी, महेश कुमार किशनानी, नरेंद्र आसुदानी, मनोज अड़वानी, चांदनी इसरानी, चांदनी थावानी, नमीशा खेमनानी, हीना नारवानी, कोमल, साहिल मलानी, जयकुमार टहलवानी, अशोक छबड़ा, वर्षा छतवानी, वीना तोरानी, संतोष मूलवानी और सुजल ग्वालानी रहे। संगीत दिया था संतोष मूलवानी, प्रकाश व्यवस्था शहजोर अली और रूप सज्जा रवि बांका की रही।

आयोजकों के अनुसार संगीतमय सिन्धी नाट्य प्रस्तुति का मुख्य उद्देश्य सिंधियत को जिदा रखना, इष्टदेव भगवान श्री झूलेलाल का सिंधी समाज पर किए गए उपकारों को आम जन तक पहुंचाना व सनातन हिन्दू धर्म एवं समाज को एकीकृत करना था।

iTVoice® all things tech.

India's Premier IT Magazine & First Daily Tech News OTT

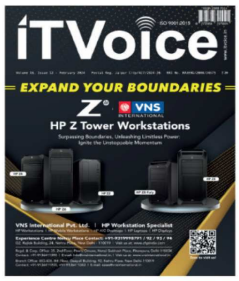

Magazines & Newspapers

Highest Digital Presence

www.itvoice.in

Daily Tech News & Podcasts

Contact for Print & Digital Marketing

+91 141 4014911
info@itvoice.in

ICPL
www.icpljpr.com

Professional IT Support

Domain & Hosting
Web Development
Customized Software Solution
Web Operation
Client / Server Management
Network Maintenance
Service Desk Support
Customized IT Support Services
Dealing in all Major Brands

Informatic Computech Private Limited

Jaipur - Rajasthan (Ph.) +91-141-2280510 md@icpljpr.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक तरूण कुमार टांक के लिये महारानी प्रिन्टर्स प्लाट नं. 17, माँ वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड, जयपुर से मुद्रित एवं 52/121, वीरतेजाजी रोड, मानसरोवर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-तरूण कुमार टांक Email: mahanagarstambh@gmail.com